शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 01 | उदयपुर रविवार 15 जनवरी 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सम्मान से जिम्मेदारी का अधिक संज्ञान होता है : डॉ. भानावत

सम्मान पाना अधिक अच्छा लगता है पर इससे भी अधिक जिम्मेदारी का संज्ञान होता है। सम्मान देने वालों की अपेक्षाओं, उम्मीदों और आशाओं पर अधिक सजग होकर काम करने की प्रेरणा से ही सम्मान की सार्थकता भी है। ये विचार डॉ. महेन्द्र भानावत ने नाथद्वारा में साहित्य मण्डल द्वारा आयोजित समारोह में व्यक्त किये।

अवसर था राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त श्री भगवतीप्रसादजी देवपुरा स्मृति सम्मान का। सम्मान स्वरूप फाउण्डेशन के राजकुमार जैन 'राजन' और साहित्य मण्डल के श्याम देवपुरा ने डॉ. भानावत को पन्द्रह हजार एक सौ रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र, शॉल, माला तथा श्रीनाथजी का प्रसाद भेंट किया।

'शब्द रंजन' संपादिका रंजना 'संपादकश्री'

6 जनवरी को नाथद्वारा के साहित्य मण्डल द्वारा शब्द रंजन की सम्पादिका रंजना भानावत को 'सम्पादकश्री' सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर रंजना ने कहा कि इस सम्मान की मुझे अकल्पनीय खुशी है। विवाह के पश्चात ही साहित्य और साहित्यकारों से रू-ब-रू हुई। जो भी कुछ हूं, डॉ. महेन्द्र भानावतजी की देन हूं। लोग मिलने आते हैं, मुझे उनकी बिटिया ही समझते हैं। जब वे पूछते हैं तब पापा कहते हैं, यह बहू है।

कान्यो मान्यो

दूध का दूध, पानी का पानी

पटेलबा की धूणी पर कान्यो-मान्यो दोनों पहुंच गये। धूणी पर नियमित आने वाले आसपास के गांव-पटेल भी थे। सर्दी में तापते-तापते चाय की तपेली चढ़ा दी। उसमें दूध-पानी, पत्ती तथा अन्य मसाला सब मिला दिया।

कान्यो बोला, और तो सब ठीक है पर दूध-पानी की मात्रा हाफ-हाफ या थ्री-फोर्थ रहेगी। मान्यो बोला, घर पर तो हाफ-हाफ यानी आधा दूध और आधा पानी की चाय पीते हैं। यहां जो भी स्थिति हो।

एक पटेल बोला, हमारे गांव में तो सौ टका शुद्ध दूध मिलता है। दूसरा बोला-ऐसा हो ही नहीं सकता। दूध में जब तक पानी नहीं मिलेगा, दुधारु पशु बीमार रहेगा।

कान्यो बोला, सही है, पानी तो घर बैठे की कमाई है। दूधिये को हाथ में गंगाजली देकर पूछो कि शुद्ध दूध भी कभी बेचा है। मान्यो बोला, मैं भी कुछ दिनों खुद दूध लेने जाता ताकि शुद्ध दूध पीने को मिले पर कितनी ही निगाह रखो, दूधिया पानी मिलाये बिना चैन नहीं लेगा।

एक पटेल बोला, बीस वर्ष से एक ही दूधिया दूध ला रहा था। वह मरा तो उसके बेट ने लाना शुरू किया। उसने देखा कि यहां तो कोई दूध-पानी का फर्क समझने वाला नहीं सो दूध से अधिक पानी मिलाना शुरू कर दिया। मैंने उससे छुट्टी पा ली। पास बैठा पटेल बोला, सबसे अच्छी कमाई ही दूध की है। सुबह उठते ही दूध में पानी मिला दो, जितना पानी मिलेगा, वह दूध के तोल की कमाई है।

कान्यो बोला, मेरे नाना के गांव वालों ने तै किया कि कोई पानी नहीं मिलायेगा। किसी को देख लिया तो पांच सौ रुपया फाईन किया जाएगा। हेंडपम्पों पर भी निगरानी रखी गई। एक दूध वाला आदत से मजबूर था। बिना पानी मिलाये चैन नहीं पाता था सो अंधेरे में बावड़ी का पानी लाकर दूध में मिला दिया। सुबह देखा तो दूध में छोटी-छोटी मछलियां तैर रही थीं। पंचायत बैठी। समझेबुझे लोगों की राय थी कि सतयुग में हंस दूध का दूध, पानी का पानी कर देता था। अब वह भी कलयुग देख हंस रहा है। उसमें दूध की ताकत नहीं रही बल्कि उसका पानी भी उतर चुका है।

सोजतिया ज्वेलर्स

• लेटेस्ट 916 हॉलमार्क गोल्ड ज्वेलरी • रिजनेबल मेंकिग चार्ज
• डायमण्ड पोलकी ज्वेलरी• डायमण्ड ज्वेलरी IGI सर्टिफिकेट के साथ
• शुद्ध चाँदी के सिक्के, बर्तन, मूर्तियाँ आदि

भट्ट जी की बाड़ी, उदयपुर.
0294-2410331, 9214356031

स्मृतियों के शिखर (24) : डॉ. महेन्द्र भानावत

यशस्वी लोकगायक चन्द्र गंधर्व

चन्द्र गंधर्व जहां भी गये, मेवाड़ के शौर्य और पराक्रम को गाया। राजस्थान की रसरंगी परम्परा को प्रतिष्ठित किया। अपनी मधुर वाणी और स्वाभिमानी ठसक को कहीं गलने नहीं दिया। जन-मन-रंजन के साथ उन्होंने मेवाड़ की स्वाधीनतापरक हल्दीघाटी की माटी की महक फैलाई और धोरों की धरती की धड़कन को तालमय स्वर का सम्मोहन दिया। मैंने उनकी जवानी देखी है। गायकी के समय होनेवाली बड़ी-बड़ी आंखों से झरता शौर्य, हिमालय को छूता हिया, ताड़ से हवा में लंबे होते हाथ और श्रोता समुदाय को वीर भावों में फड़कते तथा भक्तिभावों में विदेह होते देखा है।

चन्द्र गंधर्व रजवाड़ी गायन परम्परा के यशस्वी गायक थे। उनके पूर्वज चित्तौड़ के प्रथम शाके में रावल रत्नसिंह की सहायता हेतु मेवाड़ के शीशोदा ठिकाने के राणा लक्ष्मणसिंह के साथ आये थे। लक्ष्मणसिंह के साथ चन्द्र गंधर्व के पूर्वज रणधवल भी वीरगति को प्राप्त हुये। महाराणा हमीर इन्हीं लक्ष्मणसिंह के पौत्र थे जिन्होंने सन् 1336 में चित्तौड़ को अपने अधिकार में कर लिया। इतिहास खोजी स्वरूपसिंह चूण्डावत ने बताया कि हमीर ने चन्द्र गंधर्व के पूर्वजों को सम्मानसूचक अपना पोलपात बनाया और रणवाद्य नगाड़ा तथा मंगलसूचक ढोल सौंपा। कहना नहीं होगा कि चन्द्र गंधर्व के पूर्वज कई युद्धों में अग्रणी रहे और बहादुरीपूर्वक उत्सर्ग किया। खानवा, हल्दीघाटी तथा बांदरवाड़ा की प्रसिद्ध जंग में उनके पूर्वजों का उल्लेखनीय योग रहा।

चन्द्र गंधर्व के पिता गोपाल गंधर्व भी उसी गौरवशाली परम्परा के पोषक राजगायक तथा कवि थे। वे महाराज बावजी चतुरसिंह के बड़े भक्त थे और उनके लिखे गीतों तथा भजनों को बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते थे। वही प्रभाव चन्द्र गंधर्व में भी कंठासीन हुआ। चन्द्र गंधर्व जहां भी गये, मेवाड़ के शौर्य और पराक्रम को गाया। राजस्थान की रसरंगी परम्परा को प्रतिष्ठित किया। अपनी मधुर वाणी और स्वाभिमानी ठसक को कहीं गलने नहीं दिया। जन-मन-रंजन के साथ उन्होंने मेवाड़ की स्वाधीनतापरक हल्दीघाटी की माटी की महक फैलाई और धोरों की धरती की धड़कन को तालमय स्वर का सम्मोहन दिया।

इसे सुयोग ही कहा जायेगा कि चन्द्र गंधर्व के भाई देव गंधर्व ने भी संगीत के क्षेत्र में बड़ा नाम कमाया। बारह वर्ष की उम्र में वे लोक कला मंडल में आकर अपने भाई-भाभी के साथ जुड़े रहे और फिर पिताजी के साथ बड़ौदा चले गये जहां पुरूषोत्तम दास राठौड़ और शिवकुमार शुक्ल से संगीत की शिक्षा ग्रहण की। यहीं जब वे 19 वर्ष के थे तब आकाशवाणी की अ.भा. संगीत प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें देव गंधर्व प्रथम आये और राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किया।

यहां से वे मुम्बई चले गये जहां कल्याणजी आनंदजी ने संकोच फिल्म में गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु नामक मंत्र-श्लोक गाने के लिए अपने साथ जोड़ा। इससे उन्हें अच्छी ख्याति मिली किन्तु वे फिल्म क्षेत्र में जाने के इच्छुक नहीं थे। देव गंधर्व ने कल्याणजी आनंदजी तथा हेमा मालिनी के परिवार वालों को संगीत की शिक्षा दी। उनका मानना था कि संगीत की साधना बहुत दुष्कर है किन्तु जो इसे साध लेता है वह आत्मशक्ति से परिचित हो जाता है। संगीत से ध्वनिमय आकाशवाणी सुनी जा सकती है और स्वरलिपि से सुदर्शन चक्र का आभास हो सकता है।

देव गंधर्व का प्रिय वाद्य सुरमंडल था। उन्होंने भांक के मौनी बाबा तथा अजाबगढ़ी के करीम अली बापू त्रिपूटी को अध्यात्म गुरु बनाया और जूनागढ़ में रामलखनदास महंत से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। वे सांई बाबा के भक्त थे और उन्होंने बताया कि कई बार सांई बाबा की कृपा से वे मौत के मुंह में जाने से बचते रहे। उनकी मान्यता थी कि संगीत के जादू से प्रकृति में भी परिवर्तन संभव है। मौसम भी बदला जा सकता है। वे सुगम और शास्त्रीय संगीत में बड़ा फर्क मानते थे और कहते थे कि सुगम संगीत हल्का और कच्चा होता है। यदि वे सुगम संगीत अपना लेते तो अध्यात्म की शक्ति से वंचित हो जाते। उन्हें भैरव, कल्याण और सारंग राग अति प्रिय थी। उन्होंने मीनाक्षी, टोडी, कृष्ण कौस, गरुड़ ध्वनि, शिव शक्ति, कलिम अली दरबारी, सारंग दरबार तथा दुर्गाणी जैसी रागें निकालीं।

चन्द्र गंधर्व ने राजस्थानी लोकगीतों के साथ-साथ मीरां के भजन, रजवाड़ों की विशिष्ट गायकी मांड गीतों को भी गाया साथ ही प्रसिद्ध हिन्दी कवियों द्वारा लिखे गीतों को भी अपने स्वर से सवाया बनाया। सोहनलाल द्विवेदी रचित 'मुक्ति के नूतन दिवस की आज नूतन वंदना है', माखनलाल चतुर्वेदी की लिखी 'एक फूल की चाह', सुमित्रानंदन पंत प्रणीत 'ज्योति भूमि जय भारत देश' तथा जयशंकर प्रसाद की लिखी 'वीणा वादिनी वरदे' गीत-रचना के अलावा उदयपुर के जनार्दनराय नागर लिखित 'ज्योतिर्मय यह देश हमारा' तथा नंद चतुर्वेदी का 'कोटि चरण आओ' शीर्षक गीत गाकर वे श्रोताओं को देश-प्रेम के राग में डूबो देते। सर्वाधिक रूप में उन्होंने नंद चतुर्वेदी का गीत अधिक गाया। गंधर्व ने कहा भी कि शिक्षण-संस्थाओं तथा प्रबुद्धों के बीच जब-जब भी उनका कार्यक्रम आयोजित किया गया, उनकी पहली पसंद यही गीत बना। इसके तीन चरण थे।

मेवाड़ की महिमा चन्द्र गंधर्व की रग-रग में रंगीपंगी थी। अच्छे रचनाकार होने के कारण उन्होंने मेवाड़ की स्तुति तथा यश-गौरव को दर्शाते कई दोहे लिखे। यथा-

निज स्वारथ हित सह मर्‌या,
मर-मर झोंकी भाड़।
देश धरम हित एकलो, मरियो यो मेवाड़॥
भूमंडल में पाटवी, आडावला पहाड़।
नभमंडल में सूर्य ज्यूं, भारत में मेवाड़॥
त्रस्त हुआ तम तोम में, द्वादस ज्योतिर्लिंग।
भारत हित भारत रच्या, एकल प्रभु इकलिंग॥
महिमा मम मेवाड़ री, अतुल अमूल्य अमाप।
भारत जद आरत हुओ, पत राखी परताप॥

ऐसे चन्द्र गंधर्व ने एक हजार से अधिक दोहों की रचना की। जब उनसे मैंने पूछा कि उन्हें कौनसा दोहा श्रेष्ठ लगा तो वे तनिक सकपकाये किन्तु कुछ ही क्षण में अपने को संभालते हुए ऊंची राग में यह दोहा गाकर सुनाया-

अंग-अंग भंग जंग में, खंग रंग सर्वांग।
एकलिंग दिव्यांग संग, सांगो सांगोपांग॥

एकलिंगनाथ मेवाड़ के अधिपति देव हैं जिनके चरणों में महाराणा प्रताप ने अपना राजपाट रख दिया और विनयपूर्वक निवेदन किया कि वे उनका दीवान बन मेवाड़ वंश की सेवा करेंगे।

सन् 1955 में चन्द्र गंधर्व ने पहला कार्यक्रम भागलपुर में दिया। इसे वहां के मारवाड़ी संगठन ने आयोजित किया था। इसमें 'मीरां थारे कई लागे गोपाल' पद ने बड़ी ख्याति दिलाई। उनके पास शौर्य, श्रृंगार, भक्ति आदि सभी तरह के गीतों की उदात्त गायकी थी। इसी वर्ष जयपुर में जब आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना हुई तो प्रति सप्ताह ही उनके गीत प्रसारित होते रहे। उनकी सहधर्मिणी शशिकला भी अच्छी गायिका थी। कई यात्राओं में दोनों साथ रहे और अपनी गायकी की छाप छोड़ी।

एकबार पटना में मारवाड़ी समाज ने चन्द्र गंधर्व का कार्यक्रम आयोजित किया। उसमें रामधारीसिंह 'दिनकर' को अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया। दिनकरजी ने कहा कि वे मारवाड़ी समझते नहीं हैं और फिर रेडियोवाले भी राजस्थानी लोकगीतों का रेकार्डिंग कर जो प्रसारण देते हैं उसमें अधिकांश गीतों की भौंडी नकल ही मिलती है। उन गीतों के उच्चारण, भाषा, धुन और अर्थ कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। इस पर चन्द्र गंधर्व ने कहा कि दिनकरजी की बात कुछ हद तक सही है परन्तु सब कुछ ऐसा नहीं है। ओंकारनाथ ठाकुर के घराने में कोई गवैया नहीं हुआ पर मेरा घराना तो पूरा ही राजगायकों का रहा सो मैं लंबी परम्परा से जुड़ा हूं और वह परम्परा भी मेरे साथ है जब मेरे पूर्वजों ने गाते हुए तलवार चलाई और दुश्मनों के साथ-साथ अपना भी उत्सर्ग किया।

यह कहकर चन्द्र गंधर्व ने अपना कार्यक्रम प्रारंभ किया। लगभग तीन घंटे तक उन्होंने शौर्य, भक्ति, विरह और श्रृंगारपरक गीतों से श्रोताओं को रसविभोर किये रखा। अंत में दिनकरजी मंच पर आये और चन्द्र गंधर्व की पीठ थपथपाते हुए कहा-

आज मैं चन्द्र गंधर्व का लोहा मान गया। राजस्थान के बारे में जैसा मैं सुनता और पढ़ता आया हूं उसे चन्द्र गंधर्व ने अपनी उदात्त तथा ओजस्वी गायकी से जो रस वर्षा की वह सचमुच में मुर्दे में भी जान फूंकनेवाली है।

उदयपुर में 29 मई 1930 को जन्मे चन्द्र गंधर्व का जन्म नाम जगन्नाथ था। लाला गिरधारीलाल, पन्नालाल पीयूष तथा देवदत्त नादमूर्ति उनके संगीत गुरु रहे। साहित्य के संस्कार उन्हें पं. उमाशंकर द्विवेदी, पं. जनार्दनराय नागर तथा कविवर नाथूसिंह महियारिया से मिले। उन्होंने बालाश्रम तथा मेवाड़ नाटक समाज द्वारा अभिनीत देश-भक्तिपूर्ण नाटकों में अभिनय किया। सन् 1942 की अगस्त क्रांति, स्वाधीनता आंदोलन तथा सत्याग्रह के दौरान उन्होंने राष्ट्रीय गीतों का बिगुल बजाया। वे अच्छे गायक एवं प्रचारक सिद्ध हुए। पं. नेहरू, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टंडन, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रभृति विभूतियों ने उनके लोकसंगीत को सुना और सराहना की।

उदयपुर में चन्द्र गंधर्व ने महाराणा कुंभा संगीत परिषद की स्थापना की। वे गंधर्व प्रतिष्ठान के भी संस्थापक रहे। उन्होंने महाराणा कुंभा पंचम शताब्दी महामहोत्सव, महाराणा सांगा चतु:शती समारोह, महाराणा प्रताप सार्द्ध चतु:शती समारोह, महाराणा राजसिंह त्रिशताब्दी समारोह, लोकसंत महाराज चतुरसिंह जन्म शताब्दी महोत्सव का यादगार आयोजन किया तथा नेपाल, भूटान, सिक्कीम, असम, मेघालय, नागालैंड, मिजोरम, मणिपुर की यात्राकर राजस्थान के लोकसंगीत को जन-जन में लोकप्रिय बनाया।

सन् 1976 में हल्दीघाटी चतु:शती समारोह का ऐतिहासिक आयोजन हुआ। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का उदयपुर आगमन हुआ तब महाराणा भूपाल स्टेडियम में विशाल जनमेदिनी के समक्ष चन्द्र गंधर्व ने अपने द्वारा रचित काव्य ग्रंथ 'इंदिरायण' के दोहों का परायण कर राष्ट्रीय प्रसारण द्वारा बड़ी लोकप्रियता हासिल की। इसी प्रकार 1978 में गांधी निधि दिल्ली में काका कालेलकर, श्रीमन्नारायण तथा कविवर भवानीप्रसाद मिश्र के सान्निध्य में किया गया काव्यपाठ बड़ा चर्चित रहा। ऐसी ही ख्याति चन्द्र गंधर्व ने पंचम धाम पवनार में विनोबा भावे की प्रार्थना सभा में स्वरचित 'बजाज बावनी' की सांगीतिक प्रस्तुति द्वारा प्राप्त की। अपनी पचास वर्ष की आयु में अर्धांगिनी शशिकला के निधन को वे नहीं झेल पाये फलस्वरूप अपने नाम के साथ उन्होंने सदैव के लिए शशि को जोड़ते हुए अपना नाम चन्द्र गंधर्व शशि कर दिया।

चन्द्र गंधर्व ने महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू पर भी टकशाली दोहे लिखे। अपने से संबंधित 'गंधर्व सतसई' भी लिखी। पत्नी के बिछोह पर उन्होंने लिखा - 'चन्द्र हुवो अर्धांग बिन अध पिंजर अध प्राण।' अखिल भारतीय लोक संस्कृति संस्थान इलाहाबाद के उद्घाटन समारोह तथा इस संस्थान द्वारा आयोजित मुम्बई, हैदराबाद तथा उज्जैन के समारोहों में चन्द्र ने राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया और अपनी बुलंद गायकी द्वारा यहां के शौर्य, भक्ति और प्रेम की छाप छोड़ी। इसी संस्थान द्वारा वे 'लोकरंगश्री' से अलंकृत भी किये गये।

अपने 75 वर्षीय जीवन के कई खट्टे-मीठे अनुभवों-संस्मरणों में हिलारे-हींडे खाते चन्द्र गंधर्व ने बहुत सारी बातें मुझे बताई थीं। वह दिन 25 जुलाई 2003 का था। अपनी बीमारी से भी वे तंग आ गये थे। चलने फिरने में वे आसान नहीं थे। वाकर के सहारे उठ-बैठते थे। मैंने उन्हें बड़ी आत्मीयता से अपने पास की कुर्सी पर बिठाया। बैठते-बैठते ही उन्होंने अपना एक हाथ हवा में देते हुए यह छंद उच्चरित किया-

पिचहतर पतझड़ बीते,
यह तन-तरूवर ठूंठ होगया।
अदरक सा गदराया जीवन,
सूखसाख कर लूंठ होगया॥
कुंठाओं से लूंठित गूंठित,
मम मानस बैकुंठ होगया।
परिभाषाएं बदल गई अब,
जो सच्चा था झूठ होगया॥

मुझे लगा चन्द्र गंधर्व भीतर से बहुत टूट गये थे। अपनी उम्मीदों की किरण से बहुत पीछे छूट गये थे। उनमें वह सूर्योचित ताप नहीं रहा और शशिजनित सुखपाश भी उन्हें संताप ही अधिक दे रहा था। उनकी गायकी का गर्वोन्नत भी ढल चुका था। मैंने उनकी जवानी देखी है। गायकी के समय होनेवाली बड़ी-बड़ी आंखों से झरता शौर्य, हिमालय को छूता हिया, ताड़ से हवा में लंबे होते हाथ और श्रोता समुदाय को वीर भावों में फड़कते तथा भक्तिभावों में विदेह होते देखा है।

चन्द्र गंधर्व को इस बात का सदैव मलाल रहा कि जिस उल्लास के साथ उन्होंने ओंकारनाथ ठाकुर को आमंत्रित कर महाराणा कुंभा संगीत परिषद का उद्घाटन करवाया था जिसके हम सब साथी साक्षी थे, वह संस्था पराये हाथों में चली गई है। सचिव प्रतापसिंह मुर्डिया पर उन्होंने 'प्रताप छत्तीसी' लिखी। एकबार चेटक चौराहे पर उसका सस्वर वाचन रखा। वहां नंद चतुर्वेदी और मैं भी था। उसका मुझे एक दोहा अभी भी याद है-

गण्य अहिंसक जैन रा, थूं हिंसक अण धाप।
पर घर लाय लगावनैं, तप तापे परताप॥

तब चन्द्र गंधर्व तुनक में थे, पिये हुए सो हम उनसे अधिक बात नहीं कर पाये। यहां से वे उठकर पासवाली गली में गये जहां पीनेवालों की दुकान थी। वहां उन्होंने कुछ और चढ़ाई और आगे चल दिये। हम दोनों उनसे कुछ दूरी पर उनके पीछे-पीछे अपने कदम बढ़ाते रहे। रात ऐसी हो गई थी जिसमें कोई दिखाई तो देता था पर उसे पहचानना मुश्किल था। चन्द्र गंधर्व हवा में लहराते भूपालपुरा पहुंचे। वर्माजी के बंगले के पासवाली गली के एक मकान में परिषद का कार्यालय था। वहां परिषद के नाम का बोर्ड लग रहा था जो अंग्रेजी में था। चन्द्र किसी तरह उस तक पहुंचे और उस बोर्ड पर अपने साथ लिये डिब्बे से डामर निकाल पोता। यह अंग्रेजी के विरोध का संकेत था। यहां से चन्द्र किधर, कब गये, हमें नहीं पता कारण कि हम उनसे पहले ही अपना गंतव्य पकड़ चुके थे।

चन्द्र गंधर्व पहले लोकगायक थे जो पहलीबार राष्ट्रपति भवन पहुंचे और राजस्थान के लोकसंगीत की पहलीबार किसी राष्ट्रपति को रसानुभूति कराई। उसके बाद चन्द्र हैदराबाद में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से मिले जब वे राष्ट्रपति पद से निवृत्त हो गये थे। वहां भी चन्द्र ने अपनी सहधर्मिणी के साथ राजेन्द्रबाबू को लोकगीतों का रसास्वादन कराया। प्रस्तुति पूर्व चन्द्र ने कहा कि राजस्थान के ऐसे कई सच्चे मोती हैं जो सारे देश में फैले हुए हैं। मैं उन्हें बटोरने को पूरे देश का भ्रमण कर रहा हूं। वे अपने प्रांत को भूल गये हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 जनवरी 2017

सम्पादकीय

शब्दों की यात्रा रंजनमय
पूरी करली वर्ष हो गया।
बारह मास बीते हैं जैसे
अच्छाई का बीज बो गया।।
अभी पौध है, छोटे पत्ते
नरम-नरम डाली की लाली।
स्वर-शब्दों की फूंख ताप से
स्वर्ण रेत बनती उजियाली।।
सबका हो आशीष
सभी का शीश बन सके।
वरदे सुरसत माय
कि सीना सकल तन सके।।

ख्यात कवि बैरागीजी 'भारत श्रेष्ठ कवि'

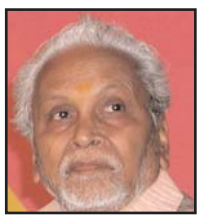

पिछले माह 24 दिसम्बर को प्रख्यात कवि बालकवि बैरागी मुम्बई में 'अटलबिहारी वाजपेयी भारत श्रेष्ठ कवि सम्मान' से अलंकृत हुए। अवसर था पूर्व प्रधानमंत्री और अपने अन्दाज के श्रेष्ठ कवि अटलबिहारी वाजपेयीजी के जन्म दिवस की पूर्व संध्या का। गोवा की राज्यपाल सुधी साहित्यनिधि मृदुला सिन्हा ने बैरागीजी को सम्मानस्वरूप एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह की राशि भेंट की।

मातुश्री सभागार में आयोजित भव्य समारोह में 'परोपकार' संस्था द्वारा दिया गया यह सम्मान कई दृष्टियों से अनूठा रहा। लोकहित एवं लोकसेवा के उद्देश्य से यह संस्था 1998 में स्वामी सत्यमित्र के करकमलों से स्थापित हुई। राजनीति से सर्वथा विलग 'परोपकार' के अध्यक्ष शंकर केजरीवाल हैं। पिछले वर्ष ही 19 जुलाई को मेरठ में बालकवि बैरागी 'वाणी सम्मान' से नवाजे गए। यह सम्मान भी पूरे एक लाख रुपये का था। शब्द रंजन परिवार की बहुत-बहुत बधाई।

युग्मराग का पर्व

-डॉ. मालती शर्मा

इस धरती पर
सृष्टि के युग्मराग के दो तारों से
अपने दो दलों, दो पल्लों में
बीज हो तो अक्षय है!
विश्व की जिन्दगी
सृष्टि के चर्या तत्व बीज की, अन्न की
अक्षयता का पर्व उत्सव है
तृतीया का अक्षय !
सोने सी, गेहूं की बालों से बने
स्वस्तिकों से भरी धरती के आंगन के
मंगल महोत्सव है....
बैसाखी.... अक्षय तृतीया !
सृष्टि के युग्मराग की गूंज है
बैसाखी के ढोल, नर्तन हैं गिद्धा और भांगड़ा
खत्तियों और अन्न के भंडारण के अड्डों में
धरती पर जीवन के लिए
सृष्टि के युग्मराग का नियोजन, प्रबंधन है।
अक्षय अक्षत अमरत्व।

फैशन शो के साथ डांस कम्पीटीशन भी

उदयपुर। कर्मा इवेन्ट्स, अशोका पैलेस व एनआईसीसी के संयुक्त तत्वावधान में 28 जनवरी को क्रिमजन पार्क होटल में महिलाओं के लिए पहली बार डांस के साथ फैशन शो आयोजित होगा जिसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

कर्मा इवेन्ट्स की सीए मीनाक्षी ने प्रेसवार्ता में बताया कि माईवे एवं हाईवे थीम पर आयोजित होने वाले इस फैशन शो में टेडिशनल, बाईकर, विक्टोरियन एवं अप टाउन थीम पर महिलाएं रेम्प पर केटवॉक करेंगी। करीना बजाज व मोनिका मेवाड़ा ने बताया कि फैशन शो में 150 महिलाएं भाग लेंगी जिन्हें आयोजन से पूर्व वर्कशॉप में तीन दिन की ट्रेनिंग दी जाएगी। एंकर महक सोनी व सोनाली पाहुजा ने बताया कि फैशन शो के दौरान आयोजित होने वाली नृत्य प्रतियोगिता सोलो एवं ग्रुप डांस में होगी। इस आयोजन में एनआईसीसी की डॉ. स्वीटी छाबड़ा एवं अशोका पैलेस के मुकेश माधवानी द्वारा सहयोग दिया जा रहा है। महक सोनी बताया कि कर्मा इवेन्ट्स का यह तीसरा इवेन्ट होगा। कर्मा इवेन्ट्स पांच महिलाओं द्वारा बनायी गई कम्पनी है जो सिर्फ महिलाओं के लिए ही काम करती है।

जन्मजात कूबड़ेपन से मिली निजात

उदयपुर। किसी घर में बेटी का पैदा होना एक अभिशाप माना जाता है ऐसे में अगर पैदा होने वाली लड़की के कूबड़ेपन कि समस्या हो जाए तो यह उसके लिए जन्मजात अभिशाप बन जाता है और इसी जन्मजात अभिशाप से माफीकुंवर को मुक्ति दिलाई है पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल ने।

जालोर जिले के अजीतपुरा निवासी 10 वर्षीय माफी कुंवर जन्म से ही कुबड़ेपन की समस्या से परेशान थी। परिवारवालों ने कई जगह दिखाया लेकिन महंगे इलाज और गरीबी के चलते इलाज कराना सम्भव नहीं था। परिवार वाले उसे पेसिफिक हॉस्पीटल लेकर आए जहां माफी कुंवर को जोइन्ट एवं स्पाइन सर्जन डॉ. सालेह मौहम्मद कागजी को दिखाया तो जांच करने पर उसे स्कोलियोसिस-काइफोसिस की बीमारी से ग्रसित पाया जिसका कि ऑपरेशन द्वारा ही इलाज सम्भव था। लगभग तीन घण्टे चले इस सफल ऑपरेशन को डॉ. कागजी के साथ डॉ. प्रकाश औदित्य, डॉ. समीर गोयल, सुभाष और बृजेश भारद्वाज की टीम ने अंजाम दिया। इस ऑपरेशन में माफीकुंवर के रीढ़ की हड्डी में रॉड डालकर कूबड़ेपन (टेढ़ापन) को खत्म करने में सफलता हासिल की। माफी कुंवर अब बिलकुल सही है और एक सामान्य नागरिक की तरह आत्मविश्वास के साथ जिन्दगी जी सकती है। डॉ. सालेह मौहम्मद कागजी ने बताया कि भारतवर्ष में इस तरह की कमर की विकलांगता काफी प्रचलित है लेकिन जटिल ऑपरेशन एवं महंगे खर्च की वजह से इससे निजात पाना मुश्किल होता है। क्यूंकि इस तरह के ऑपरेशन पर लगभग दो से ढाई लाख रूपए तक का खर्चा आता है लेकिन पेसिफिक हॉस्पिटल के चैयरमैन राहुल अग्रवाल के इलाज में मदद करने से माफी कुंवर को नई जिन्दगी मिल सकी है।

ज़िंक के यशद भवन को मिला प्लेटीनम रेटिंग अवार्ड

उदयपुर। वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान जिंक़ को कन्फेडरेशन ऑफ इण्डिया ने आईजीबीसी ग्रीन एग्जिस्टिंग बिल्डिंग्स रेटिंग के लिए 'प्लेटीनम रेटिंग अवार्ड' से सम्मानित किया है। यह सम्मान हिन्दुस्तान जिंक़ प्रधान कार्यालय के यशद भवन को हरा-भरा, जल क्षमता, ऊर्जा दक्षता, नवाचार, स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण, उत्कृष्ट प्रबन्धन एवं सुविधाओं से युक्त बनाये रखने के सफल क्रियान्वयन के लिए इण्डियन ग्रीन बिल्डिंग काउन्सिल हैदराबाद ने प्रदान किया ।

सम्मान सीआईआई-सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिज़नेस सेन्टर, हैदराबाद के कार्यकारी निदेशक के.एस. वैंकटगिरी ने हिन्दुस्तान ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल को ज़िंक के प्रधान कार्यालय में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया। इस दौरान उदयपुर जिला कलेक्टर रोहित गुप्ता विशिष्ठ अतिथि के रूप में मौजूद थे। इस अवसर पर के. एस. वैंकटगिरी ने बताया कि उदयपुर स्थित हिन्दुस्तान जिंक़ का प्रधान कार्यालय पूरे देश की उन इमारतों के लिए उत्कृष्ट उदाहरण है जो कि अपने कार्यस्थल में सदैव हरियाली रखे हुए है। जिंक़ भारत की प्रतिष्ठित कंपनियों में से एक है जिसे आईजीबीसी द्वारा 'प्लेटीनम रेटिंग अवार्ड' से सम्मानित किया है।

सुनील दुग्गल ने कहा कि जिंक़ के प्रधान कार्यालय को पूर्णरूप से ग्रीन बेल्ट के रूप में विकसित किया गया है और यह सौर ऊर्जा से संचालित है। जिंक़ के सभी परिसर एवं संयंत्रों में 13 लाख से अधिक वृक्षारोपण है।

साहित्य मंडल का साहित्यिक-सम्मान-कुंभ

साहित्य मंडल, नाथद्वारा द्वारा 6-7 जनवरी को मंडल के संस्थापक श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा की पावन स्मृति में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें देशभर से विविध भाषाओं के साहित्यसर्जकों का अद्भुत समागम हुआ।

मंडल के प्रधानमंत्री श्यामजी देवपुरा ने बताया कि दोनों दिनों के 21 सत्रों में साहित्यिक कुंभ का नजारा रहा जिनमें 50 से अधिक ब्रजभाषा साहित्य संस्कृति के साथ ही स्मृति शेष देवपुराजी के सम्बंध में विद्वानों द्वारा जो पत्रवाचन, उद्बोधन, काव्य-सृष्टि हुई वह अकल्पनीय ही कही जायेगी।

श्यामजी के अनुसार भगवतीप्रसादजी देवपुरा स्मृति सम्मान 15 हजार एक सौ की राशि द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत को तथा पांच हजार एक सौ रूपये का ब्रजकांत साहित्य सम्मान डॉ. ओमानंद सरस्वती को, अंबालाल हिंगड़ स्मृति सम्मान डॉ. बशीर अहमद 'मयूख' को, इन्द्रादेवी हिंगड़ स्मृति सम्मान डॉ. उषा यादव को प्रदान किया गया। ये सम्मान श्री राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त थे। डॉ. हीरालाल श्रीमाली को रवीन्द्र गुर्जर स्मृति सम्मान के प्रदाता दीपक गुर्जर द्वारा दिया गया। काव्य कौस्तुभ नामक मादन उपाधि से आशा पांडे ओझा, डॉ. कृष्णा जैमिनी, कृष्णलता यादव, डॉ. हेमलता, डॉ. पूनम भाटिया तथा डॉ. रेखा लोढ़ा सम्मानित की गई।

संपादकश्री की मानद उपाधि से सम्मानित होने वालों में अनिल 'अनवर', अविनाश शर्मा, आनंद शर्मा, धर्मेन्द्र सूर्या, शकुंतला सरूपरिया तथा रंजना भानावत नवाजे गए। काव्य-भूषण से समादृत होने वालों में कमलेश कटारिया, श्रीमती मधुर, एकता सारड़ा, प्रिया महेश बच्छानी, नंदकिशोर 'निर्झर', कृपाशंकर शर्मा, हाजी शाबिद शुक्रिया, कासिम बीकानेरी थे। साहित्य सुधाकर से समालंकृत होने वालों में डॉ. शेषपाल सिंह, प्रो. भगवानदास जैन, डॉ. राकेशकुमार सिंह, डॉ. महेन्द्रप्रताप तिवारी, डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा, संतोषकुमार सिंह, मातादीन मिश्र, जयसिंह 'नीरद' तथा डॉ. अशोक पंड्या प्रमुख थे।

साहित्य सुधाकर का सम्मान डॉ. राधेश्याम भारतीय, राधेश्याम शाक्य, गोविन्द भारद्वाज, हीरालाल लुहार, प्रकाश तांतेड़, सावित्री चौधरी, डॉ. संतोष सांघी, डॉ. राहिला रईस तथा इन्द्रदेव गुलाटी को प्रदान किया गया। ढाई हजार की राशि से सम्मानित होने वालों में काशीलाल शर्मा तथा आस्था सक्सेना एवं इक्कीस सौ से हरेराम वाजपेयी, करतार योगी, अनिलकुमार, कोमल वाधवानी तथा शांतिलाल जोशी थे।

इसी प्रकार रामचन्द्र दवे, गोपाललाल त्रिपाठी, नंदलाल चैचाणी तथा रमेशचन्द्र पारीख को श्रीनाथद्वारा रत्न की मानद उपाधि प्रदान की गई सो स्तुत्य है।

सुमंगल के लिए शुभकामनाएं

उदयपुर में 12 जनवरी 2017 को मेहता परिवार द्वारा सम्पन्न हुआ वैवाहिक समारोह। समारोह में सुभाष-अर्पिता दम्पत्ति की आत्मजा सौ. मीनल अहमदाबाद के निशान्त देव के साथ ब्याही गई। चित्र में सुभाष-अर्पिता मेहता तथा उनके भ्राता त्रय प्रवीण-वन्दना, जितेन्द्र-डॉ. कहानी तथा हेमन्त सहित अन्य परिजन नव दम्पत्ति के साथ। 'शब्द रंजन' परिवार की हार्दिक बधाई।

प्रभु अय्यपा के जन्मोत्सव मकर विलक्कू उत्सव पर श्री अय्यपा सेवा समिति द्वारा निकाली गई शोभायात्रा में केरल के कलाकार भगवान शिव, मां पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, नारद, मांग दुर्गा का आकर्षक रूप धारण किये हुए।

बालक के सिर से निकाली कूंट

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने 8 वर्षीय बालक का सफलतापूर्वक ऑपरेशन कर उसके सिर में पांच सेंटीमीटर घुसी कूंट को बाहर निकाला है। पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि सलूम्बर निवासी 8 वर्षीय बालक पिंटू पुत्र रमेशचन्द्र गांव में एक पेड़ के नीचे खेल रहा था। उसी पेड़ पर गांव का एक अन्य व्यक्ति लकड़ी काट रहा था। लकड़ी काटते समय उसके हाथ से कूंट फिसल गई और सीधे नीचे खेल रहे पिंटू के सिर में जा घुसी।

पिंटू के परिजन व रिश्तेदार उसे लेकर 9 घण्टे तक इधर-उधर घूमते रहे। फिर उन्हें बच्चे को पीआईएमएस में ले जाने की सलाह दी। इस पर परिजन बच्चे को पीआईएमएस हॉस्पिटल उमरड़ा लाए जहां न्यूरो सर्जन डॉ. सुभाष जाखड़ एवं उनकी टीम ने तुरन्त ही बच्चे का ऑपरेशन कर सिर में पांच सेंटीमीटर घुसी कूंट को बाहर निकाला। बच्चा अब स्वस्थ है।

सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट ने 116 छात्रों को स्वेटर बांटे

उदयपुर। जिले की झाड़ोल तहसील के अति दुर्गम पई गांव के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र स्वेटर पहन कर अब सर्दी का आनन्द ले सकेंगे। सोजतिया ज्वेलर्स एवं सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रो. रणजीत सिंह सोजतिया को पई गांव के स्कूल के छात्रों के पास स्वेटर न होने के बारे मे स्कूल के प्रधानाध्यापक देवीलाल शर्मा ने अवगत कराया था। इस पर प्रो. सोजतिया ने तुरन्त हामी भरते हुए 116 छात्रों को स्वेटर बांटे। कड़ाके की सर्दी में स्कूल के एक भी छात्र के पास स्वेटर नहीं था, प्रथम बार स्वेटर पहन कर सर्दी में सबके चेहरे खिल उठे। स्वेटर वितरण कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक देवीलाल शर्मा, अध्यापक भंवरलाल पालीवाल भी उपस्थित थे।

सोजतिया ग्रुप के डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि सोजतिया ग्रुप एवं सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट हमेशा से ही अभावग्रस्तों के लिए मदद का हाथ बढ़ाते रहे हैं। उन्होंने बताया कि इसी तरह उदयपुर शहर में कम्बल एवं गृहपयोगी सामान वितरित किया गया है।

'थिंक विथ मी' का अनावरण

उदयपुर। सहारा इंडिया के चेयरमैन सुब्रत रॉय सहारा द्वारा लिखित सर्वांगीण विचारोत्तेजक पुस्तक 'थिंक विथ मी' पुस्तक का अनावरण किया गया। इस अवसर पर उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, अमिताभ बच्चन, स्वामी रामदेव, ओमप्रकाश माथुर, सतीशचन्द्र मिश्र, सानिया मिर्ज़ा गुलामनबी आज़ाद, संबित पात्रा, राजबब्बर, अनिल कपूर, असदउद्दीन ओवैसी, केशवप्रसाद मौर्य, जयंत चौधरी आदि उपस्थित थे।

सुब्रतरॉय सहारा ने पुस्तक के विमोचन के समय प्रख्यात लेखक और मार्केटिंग गुरू सुहेल सेठ से वार्ता के दौरान कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्र भारत ने पर्याप्त प्रगति की, हर क्षेत्र में प्रगति की और समृद्धि भी हासिल की, लेकिन हमने अपने लिए जो लक्ष्य निर्धारित किये थे, वे आज भी अधूरे हैं। सच्चाई यह भी है कि आजादी के दौर की समस्याओं से भी बड़ी समस्याएं आज हमारे देश के सामने खड़ी हो गयी हैं, जो भविष्य के बारे में लगातार अशुभ संदेश देती हैं। इस पुस्तक के माध्यम से मैंने गहराई तक पहुंचने वाले विचारोत्तेजक विवरण के द्वारा पाठकों को इस बारे में सोचने के लिए जाग्रत किया है कि किस प्रकार हम अपने देश को आदर्श बना सकते हैं। 'थिंक विथ मी' सुब्रत रॉय सहारा द्वारा लिखित पुस्तकत्रयी की दूसरी पुस्तक है इस त्रयी की पहली पुस्तक 'लाइफ मंत्रास' का वर्ष 2016 के प्रारम्भ में विमोचन हुआ था जो राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट सेलर रही थी।

जानदार सफर से शानदार कदम गति

'शब्द रंजन' का दूसरा पड़ाव सबके योग-सहयोग से.....

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI PEACE PARK
feel the peace

ARCHI SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

पोथीखाना

रवांई क्षेत्र के लोकदेवता

जहां लोक है वहां लोकदेवता है। दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। मनुष्य का अस्तित्व देवता से और देवता

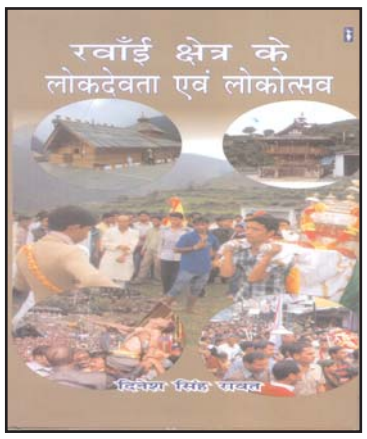

का आसरा मनुष्य से जुड़ा हुआ है। दोनों की गति-सुगति अभिन्न है हालांकि दोनों के लोक भिन्न हैं-देवलोक तथा मनुष्य लोक। सामान्यतया मनुष्य देवता का प्रत्यक्ष दर्शी नहीं है। प्रतीक दर्शी है। मनुष्य लोक की समग्र रचना का देव साक्षी, सहयोगी, सहकर्मी, पालक, परम, चरम होता है किन्तु मनुष्य उसके लोक-संदर्भ से सर्वथा अनजान रहता है।

लोकदेवता आंचलिक, क्षेत्रीय अधिक होते हैं। अंचल अथवा क्षेत्र विशेष की लोकधर्मिता, संस्कृति, सरोकार, संस्कार से जुड़े धर्म-कर्म, रीति-नीति का प्रभाव उन्हें वैशिष्ट्य दिये रहता है। इस दृष्टि से रवांई क्षेत्र के लोकदेवता का अध्ययन बड़ा दिलचस्प तथा गहरी जानकारी लिए है जो लेखक दिनेशसिंह रावत के परिश्रममूलक दृष्टिबोध तथा घुमक्कड़ी हेलमेल का द्योतक है।

सांस्कृतिक वैविध्य का धनी रवांई जनपद उत्तरकाशी का पश्चिमोत्तर क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत यमुना घाटी के नौ गांव, पुरोला तथा मोरी नामक विकास खण्ड पड़ते हैं। प्रथम अध्याय में लेखक ने रवांई क्षेत्र की प्राचीन, उत्पत्तिजनित विभिन्न स्रोत, पौराणिक संदर्भ, भौगोलिक परिवेश तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्टि से समृद्ध जानकारी दी है। द्वितीय अध्याय वैदिक, पौराणिक देवी-देवताओं की सन्निधि लिए लोकदेवता विषयक मान्यता से संदर्भित है। तृतीय अध्याय क्षेत्रीय लोक देवताओं की जानकारी लिए है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक मान्यताओं के अन्तर्गत प्रमुख देवता, उनसे जुड़े विधिविधान, आस्था-आराधना केन्द्र, महत्वपूर्ण स्थल तथा उनके वैशिष्ट्य के रेखांकन का दिग्दर्शन है। अंतिम पांचवां अध्ययन लोकदेवताओं से जुड़े विविध क्षेत्रीय मेले, प्रमुख उत्सव, राग-रंग तथा आस्था प्रसंगों का सटीक एवं संश्लिष्ट वर्णन कई तरह की अनूठी जानकारी से समृद्ध करता है।

यह महत्वपूर्ण और अचरजकारी संयोग ही रहा कि मैंने उदयपुर के सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र में 26 दिसम्बर 2016 को लोक परम्परा और साहित्य संस्कृति के विविध स्रोतों पर जब अपना व्याख्यान पूरा किया तब अचानक पुस्तक लेखक श्री दिनेशसिंह ने मेरे से भेंट की। उनकी आत्मीयता और लोकसाहित्य-संस्कृति के प्रति गहरी अभिरुचि ने मुझे शालीनतापूर्वक प्रभावित किया। उन्होंने तब ही मुझे यह पुस्तक भेंट की जो लोकपक्ष में काम करने वालों के लिए अध्ययन के कई द्वार खोलती है। यह सजिल्द पुस्तक 176 पृष्ठ लिए सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़, कैथल-136027, हरियाणा से प्रकाशित 350 रुपया मूल्य वाली है।

-म.भा.

स्वास्थ्य सुखदायिनी पुस्तिका

श्री मदनमोहन जैन मूलत: शिक्षक हैं। ज्योतिष उनका इतर विषय है। दोनों में रुचि होना और उसे दूसरों के लिए उपयोग में लाना सामान्यधर्मिता नहीं है। हर चीज अर्थवाची और बाजारु मूल्य की तुला पर तोली जाने वाली शिक्षा और ज्योतिष दोनों कमाई के खासे जरिया बने हुए हैं। ऐसी स्थिति में मदनमोहन अपवाद स्वरूप अपनी पहचान दिए शिक्षासेवी, ज्योतिषसेवी, समाजसेवी बने हुए हैं।

कानोड़ गांव में आजादी पूर्व ही शिक्षा की अलख जगाने वाले पं. उदय जैन के सुपुत्र होने के नाते मदनमोहन में वे संस्कार बने हुए हैं जिनके माध्यम से वे स्वस्थ और सुलझे समाज की रचना के स्वप्नदर्शी बने हुए हैं। इस हेतु उन्होंने पं. उदय जैन शिक्षा समिति की स्थापना की और उसके माध्यम से छोटी-छोटी उपयोगी पुस्तिकाएं प्रकाशित करा सर्व सुलभ कराईं। इनमें सरल संस्कृत व्याकरण, सरल चिकित्सा, शिक्षा

वल्लरी, सरल ज्योतिष, ज्योतिष शिक्षा, शिक्षा वल्लरी नामक पुस्तिकाएं बहुप्रशंसित हैं।

प्रस्तुत स्वास्थ्य शिक्षा वल्लरी एक सौलह पृष्ठीय पुस्तिका है जिसमें सामान्य बीमारियों का घर में ही उपलब्ध चीजों से इलाज बताया गया है।

इस प्रकार के इलाज के लिए सभी परिचित हैं और घर में 'अपना घर अपना इलाज' के लिए हर परिवार सार्थक रूप से सक्रिय भी है। अब जबकि हर व्यक्ति घरेलू इलाज को छोड़ता जा रहा है और या तो सामान्य बीमारी के प्रति वह सचेष्ट ही नहीं है और यदि है भी तो डाक्टर की शरण लेता है जिसमें उसे कौड़ी की दवा पर पंसेरी का खर्च करना पड़ता है। ऐसे में मदनमोहन जैन 'पवि' की यह पुस्तक प्रत्येक घर में उस जगह रखी जाने योग्य है जहां सामूहिक खर्च के लिए रुपया-पैसा रखा रहता है ताकि घर का प्रत्येक सदस्य आवश्यकतानुसार अपना काम निकाल ले। यह पुस्तक भी उसी तरह से सबके लिए उपयोगी, लाभकारी तथा स्वास्थ्य रक्षिका है।

-म.भा.

बॉडी बिल्डिंग में दिव्यांग मनीष ने जीता गोल्ड मेडल

उदयपुर। विनदीप्स फिट लिस्ट जिम के सदस्य मनीषसिंह चौहान ने दिव्यांग केटेगरी में बीकानेर में आयोजित राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीत कर शहर का नाम रोशन किया है।

जिम के विनदीप मैथानी ने प्रेसवार्ता में बताया कि एक दुर्घटना में मनीष अपना हाथ खो बैठा लेकिन उसने हार नहीं मानी। मनीष ने अपना पूरा ध्यान पढ़ाई के साथ-साथ अपने शरीर को फिट रखने पर लगा दिया। इसको लेकर मनीश शहर के विभिन्न जिम गया लेकिन किसी ने उनका सहयोग नहीं किया। अंत में वे विनदीप फिट लिस्ट जिम पर आये तो उसकी कमजोरी को ही मजबूत हिस्सा बनाने का निश्चय किया। मनीष के कमर के नीचे का हिस्सा मजबूत होने पर जिम के विनदीप मैथानी ने मनीष को इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया गया कि वह आज बॉडी बिल्डिंग क्षेत्र में न केवल एक नया उभरता हुआ सितारा बन गया वरन् दूसरों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत भी बना है।

कबड्डी में स्टेट चेम्पियन रह चुके मनीष ने बताया कि उन्होंने सिर्फ अपना शरीर फिट रखने के लिए जिम ज्वाईन किया था लेकिन कुछ समय बाद जब मेन्टर विनदीप मैथानी ने मेरे शरीर को तराशा तो मुझे लगा कि मैं बॉडी बिल्डिंग क्षेत्र में कुछ कर सकता हूं। उन्होंने मुझे प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और 8 जनवरी को बीकानेर में आयोजित हुई राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में दिव्यांग केटेगरी में भाग लेकर तीन प्रतियोगियों में से दो को पछाड़ का गोल्ड मेडल जीता।

विनदीप ने बताया कि मनीष अब आगे होने वाली नॉर्थ इण्डिया बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में भी राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगे क्योंकि इस प्रतियोगिता की हेण्डीकेप केटेगरी में भाग लेने वाले वे एक मात्र प्रतिभागी होंगे। इस टूर्नामेन्ट में भी उनका लक्ष्य गोल्ड मेडल ही रहेगा।

पोथीखाना

लघुकथाओं का कुंआरा आंगन

सित्तर पार कर रहे श्री भैरुसिंह राव 'क्रान्ति' का लघुकथा संग्रह मेरे सामने है- कुंआरा आंगन। इस कृति में लेखक

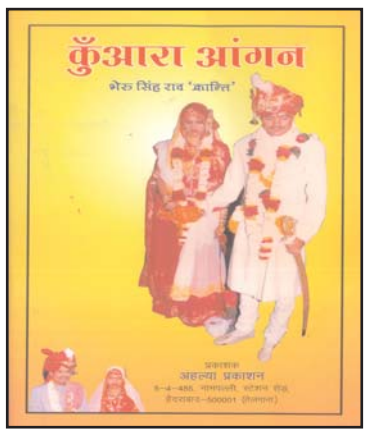

की 61 लघुकथाएं हैं। इन लघुकथाओं से पहले लेखक ने सुपरिचित कथाकार श्री रामकुमार घोटड़ का प्राक्कथन 'अपनी बात' में आत्मकथ्य, भगीरथ परिहार की समीक्षात्मक टिप्पणी, सुपरिचित कथाकार माधव नागदा का आलेख एवं श्री प्रबोधकुमार गाविल तथा माणक तुलसीराम गौड़ के विचार प्रकाशित किए हैं। 'कुंआरा आंगन' की लघुकथाएं समाज में आए परिवर्तन, इस नये परिवर्तन के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया तथा विचारों का मिलाजुला रूप है। लघुकथा आज के समय में रुचिपूर्वक पढ़ी जाने वाली साहित्यिक विधा है और पुस्तकों के रूप में तेजी से प्रकाशन की ओर अग्रसर है।

पत्र-पत्रिकाएं भी इन्हें यथेष्ट स्थान देती हैं। लघुकथा आकार की दृष्टि से छोटी होती है लेकिन कई बार 'बड़ी बात' गहराई तक पाठक के मानस-पटल पर अंकित कर जाती है।

श्री भैरुसिंह राव मूलत: कवि हैं इसलिए इस संग्रह की अधिसंख्य लघुकथाएं भावुकता की जमीन पर खड़ी दिखाई देती हैं। कथाओं की जमीन समाज तथा सामाजिक अन्त:क्रिया से आती है और इसके लिए कथा-लेखक के पास समय, धैर्य और संप्रेषण-कौशल तीनों चीजें होनी चाहिएं।

सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण की दक्षता भी कथा-लेखक में अच्छी खासी होनी चाहिए। श्री राव ने इस दृष्टि से प्रयास तो किया है पर कहीं-कहीं अधैर्य के कारण सपाट बयानी के शिकार हो गये हैं। **-डॉ. भगवतीलाल व्यास**

कदम-दर-कदम यादें

छोटी उम्र से ही साहित्यिक लेखन करने वाली कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' को लिखते-लिखते पांच दशक हो गये हैं। नाथद्वारा के साहित्यिक कुंभ में उनसे भेंटकर प्रत्येक को यह प्रेरणा मिली कि दृष्टि क्षीणता के चलते भी संकल्पित मन से वे सब बाधाएं दूर की जा सकती हैं जो कदम-दर-कदम व्यक्ति को बेमन बोझिल और निराश कर हारे को हरिनाम करती हैं।

कोमलजी को देखकर, बातचीत कर, सृजन संवाद और लेखन सुन कोई अन्दाज भी नहीं लगा सकता कि उनकी दृष्टि उनके लिए बाधक बनी हुई है। कई सुचर्चित पत्र-पत्रिकाओं में उनके योदान अवदान को पढ़कर और सुनामी सम्मानों से अलंकृत उनके दो संग्रह संस्मरणपरक 'कदम-कदम पर' तथा 'यादों का दस्तावेज' जब उन्होंने मुझे भेंट किये तो पूरा साहित्य मण्डल धन्य हो गया। उनका लेखन बैठेठाले की ठसक नहीं होकर आत्मजनित जीवनानुभवों का पारदर्शी आंख खोलने वाला पारदर्शी प्रकाश है। उदाहरण-

'कार्यक्रम में मिलकर अच्छा लगा।' उसने कहा, 'ऐसे कार्यक्रम जल्दी-जल्दी होने चाहियें ताकि हम सब मिल सकें। वैसे तो कहां मिलना हो पाता है?' किसी के भी, किसी को भी, भूल से भी अपने घर आने का निमंत्रण नहीं दिया। आज के घर इंटीरियर डेकोरेशन के लिए हैं, इंसानों के लिए नहीं।

(कदम-कदम पर, पृ. 25)

नई मां के आने से धीरे-धीरे घर का नजारा बदलने लगा था। बच्चे खुशी-खुशी मां के कथनानुसार समय पर पढ़ने व समय पर ही खेलने लगे थे। पति भी निश्चिंत हो प्रसन्नता से व्यवसाय मे संलग्न हो गया। यह देख घर के पुरुष एक-दूसरे पर फिरका कसने लगे, 'तुम भी दूसरी शादी कर लो, मजे में रहोगे।'

(यादों का दस्तावेज, पृ. 20)

दोनों पुस्तकें शब्द प्रवाह, ए / 99 व्ही. डी. मार्केट उज्जैन से प्रकाशित क्रमश: 200 तथा 250 मूल्य की हैं।

-म.भा.

गाते-गाते चलना सीखो

बाल साहित्य अधिकाधिक बालकों के हाथों पहुंचे, इस पवित्र उद्देश्य को लेकर चित्रा प्रकाशन, आकोला द्वारा साहित्यसेवी राजकुमार जैन 'राजन' ने बालसाहित्य संवर्धन योजना का शुभारंभ किया। प्रस्तुत पोथी चलना सीखो एवं आओ गाएं गीत में पवन पहाड़िया लिखित बाल कविताएं हैं। राजकुमार 'राजन' ने बताया कि संग्रह की सभी कविताएं सरल, सुबोध तथा प्रभावी हैं जो बालमन को रंजित कर पढ़ने का चाव देती हैं।

यशस्वी लोकगायक.....

पृष्ठ दो का शेष...

इस पर राजेन्द्रबाबू ने मजाकिया लहजे में कहा, जो जहां हैं उन्हें वहीं रहने दो, नहीं तो सारे देश की अर्थव्यवस्था और उद्योग ठप्प हो जायेंगे। यहां चन्द्र दम्पत्ति ने 'म्हारा सांचोड़ा मोती रे, हाले तो ले चालूं मरूधर देश' गीत से अपना कार्यक्रम प्रारंभ किया। कार्यक्रम के पश्चात राजेन्द्रबाबू ने लिखा- 'चन्द्र गंधर्व के गाये गीत और भजन सुन मैं तल्लीन हो गया।'

एक और अवसर था जब राजेन्द्रबाबू ने चन्द्र गंधर्व को याद किया। तब वे पटना में थे। मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने चन्द्र गंधर्व को वहां भेजा। सदावत आश्रम में राजेन्द्रबाबू अस्वस्थ थे। चीनी आक्रमण का समय था। डाक्टरों ने मना कर रखा था किन्तु जब उन्हें समझाया गया कि राजेन्द्रबाबू को संगीत अति प्रिय है और उसे सुन उन्हें बड़ा आराम मिलता है। गायक चन्द्र गंधर्व पूर्व में भी राजेन्द्र बाबू को अपना संगीत सुना चुके हैं और आज भी वे इसीलिए यहां बुलाये गये हैं।

चन्द्र ने बताया कि राजेन्द्रबाबू के पास उनके परिवार वाले तथा बिहार मंत्री मंडल के कुछ सदस्य बैठे हुए थे। चन्द्र से राजेन्द्रबाबू ने पूछा- क्या गाने जा रहे हो? चन्द्र बोले- मीरां का भजन। राजेन्द्रबाबू बोले- भजन तो यहां भी जयदेव विद्यापति के हैं। मैंने भजन सुनने के लिए नहीं, कुछ वजनी सुनने के लिए आपको बुलाया है। राजपूतों के शौर्य गीत सुनाओ। इस पर चन्द्र बोले- तो मैं राजस्थानी शूरवीरों से सम्बन्धित देशप्रेम के गीत सुनाऊंगा। राजेन्द्रबाबू का इशारा पाकर चन्द्र गंधर्व ने नाथूदान महियारिया रचित दोहों के मर्म को खोलते सुनाया-

घर री रज नँह जाणदे,
धरती देणी दूर।
उड़ती रज ने रोकवा,
शोणित छिड़कै सूर॥
मुट्ठी भर सूखी थकी,
निसर जावै दौड़।
रगत भिंजोई जद रही,
रेती घर राठौड़॥

और जब उन्होंने मांड राग में 'म्हारो वीर शिरोमणि देश म्हाने प्यारो लागे सा' गीत सुनाया तो राजेन्द्रबाबू तन कर बैठ गये। यह देख डाक्टरों ने चन्द्र गंधर्व को तत्काल गीत समाप्त करने को कहा। वे चन्द्र को पकड़ कर बाहर लाये और तनिक डांटते हुए किन्तु विनम्रता से कहा- आपने उनको उत्तेजित कर दिया। ऐसा उनके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है। चन्द्र गंधर्व को उस क्षण-विशेष में डाक्टरों का किया गया यह व्यवहार ठीक नहीं लगा किन्तु बाद में जब उन्होंने ठंडे मन से सोचा तो उन्हें लगा कि डाक्टर भी उनके शीघ्र स्वस्थ होने की चिंता लिये हैं। दरअसल राजस्थान के लोकसंगीत का यह प्रभाव चन्द्र गंधर्व जब प्रथम बार राष्ट्रपति भवन में मिले थे, तब ही छोड़ चुके थे।

चन्द्र गंधर्व ने जहां-जहां भी अपने कार्यक्रम दिये, अपनी सांगीतिक स्वरलहरी का लोहा दिया। वे जब मोती के दोहे गाते तो गाते चलते। उन्होंने ऐसे पचासों दोहे कंठस्थ कर रखे थे जिनमें मोती को लेकर अनूठी बातें कही गई थीं। यथा-

ए रे मोती सीपरा,
थें कौन तपस्या कीन।
कंचन के ढिग बैठके,
अधरन को रसलीन॥

ऐसे ही 'म्हारी आंखड़ली फरूखै ढोला आवसी' गाना छेड़ते तो केवल आंख को लेकर पचासों दोहे गाते चलते। इसी प्रकार प्रेम और श्रृंगार के दोहों की पिटारी खुल पड़ती-

प्रेम कर्‌यो सुख कारणे,
प्रेम कियो दुख होय।
नगर ढींढोरो पीटद्‌यूं,
प्रेम न करियो कोय॥

मान, मनुहार, मिलन, बिछोह से लेकर महफिलों से जुड़े सैंकड़ों दोहे उन्हें कंठस्थ थे। दारू के दोहों का तो उनके पास खजाना ही था। यदि वह खुल पड़ता तो पूरी महफिल ही उस रंग में रंगी बनी रहती।

चन्द्र गंधर्व जहां भी जाते पूरा सम्मान पाते। जब कभी उन्हें लगता कि उनके सम्मान में कमी आ रही है या उन्हें सुननेवाले मसखरी पर उतर आये हैं तो वे खरी-खरी सुनाने में कोई कसर नहीं रखते। एकबार कोलकत्ता में कार्यक्रम के दौरान आगे की पंक्ति में बैठे श्रोता उन्हें ठीक नहीं लगे लेकिन चन्द्र को कहा गया था कि वे उच्च धनपति हैं। चन्द्र गंधर्व कुछ समय तक तो उन्हें झेलते रहे पर अंत में उन्होंने यह कह कर कि 'यदि आप करोड़पति हैं तो मैं भी मरोड़पति हूं', अपना कार्यक्रम ही समाप्त कर दिया। उदयपुर में 14 दिसम्बर 2003 को उन्होंने अंतिम श्वांस ली।

डार्लिंग तेरे लिए ...

-डॉ. देवेन्द्र 'इन्द्रेश'-

सुना है मुन्नी बदनाम हो रही है। हमारी मुन्नी, अपनी मुन्नी, अपने देश की मुन्नी। यह हम नहीं कह रहे हैं, स्वयं मुन्नी ही धड़ल्ले से कह रही है-'मुन्नी बदनाम हुई डार्लिंग तेरे लिए' और मजे की बात देखिये कि उसके साथ सारा देश सुर में सुर मिला कर गा रहा है- 'मुन्नी बदनाम हुई डार्लिंग तेरे लिए'.....

अफसोस कि सारे देश में मुन्नी बदनाम हो रही है, लेकिन किसी को भी जरा सी भी चिन्ता नहीं है। जैसे मुन्नी उनकी अपनी न होकर परायी हो। आजकल कौन किसके लिए बदनाम होता है ! पर यह मुन्नी है कि अपने डार्लिंग के लिए खुशी-खुशी बदनाम हुए जा रही है, क्यों ?.... आखिर क्यों??.....

लगता है उसकी कोई मजबूरी रही होगी, पर ऐसी भी क्या मजबूरी रही होगी कि अपनी बदनामी का स्वयं ऐलान करते हुए अपने डार्लिंग के लिए झण्डू बाम बन जाना पड़ा। मुझे लगता है कि उसका डार्लिंग चलते-चलते फिसल गया होगा तथा उसके पैरों में मोच आ गई होगी, तभी मुन्नी को उसके लिए झण्डू बाम बन जाना पड़ा।

अगर मुन्नी अपने डार्लिंग की खातिर झण्डू बाम गई तो कोई हर्ज भी नहीं है। पहले भी बहुत सी मुन्नियां अपने डार्लिंगों के लिए जोगन तक बन गई थीं। प्रेम में सब कुछ जायज है। यही तो प्यार का उत्कृष्ट नमूना है भैया। और कुछ हुआ हो या ना हुआ हो, पर झण्डू बाम फेमस हो गया। झण्डू बाम बनाने वाली कम्पनी भी सकते में है कि ये मुन्नी झण्डू बाम कैसे बन गई। अब बन गई सो बन गई, पर बिक्री तो बढ़ गई। अब हर कोई फिसलने पर मुन्नी वाला झण्डू बाम ही लगाता है।

अब आलम यह है कि यदि छुट्टन फिसल जाएं तो वह मुन्नी वाला झण्डू बाम ही लगाता है और यदि बुड्ढन लुढक जाए तो वह भी पोपले मुंह से ही सही, मुन्नी वाला ही बाम चाहेगा। लोगों का तो यहां तक कहना है कि कैसा भी दर्द क्यों न हो, मुन्नी वाला झण्डू लगा लो एक मिनिट में दर्द छूमन्तर हो जाता है।

यह कमाल मुन्नी का है या झण्डू बाम का सो विचारणीय है। मुन्नी बदनाम हुई सो हुई, झण्डू बाम का नाम अवश्य हो गया। यहां ऐसा ही होता है। बदनाम कोई और होता है तथा नाम किसी और का होता है। लगता है मुन्नी की बदनामी से उसके डार्लिंग को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है।

तो मेरे देश की मुन्नियों ! कुछ सोचो, समझो और उठो। जिन स्वार्थी डार्लिंगों के लिए तुम बदनाम हो रही हो, झण्डू बाम बन रही हो, जिनकी सुख-समृद्धि के लिए तुम स्वयं टकसाल बन रही हो, वे डार्लिंग तुमसे खिलवाड़ करने के अतिरिक्त कुछ नहीं करेंगे। तुम्हारी बदनामी के तवे पर देश के डार्लिंग अपने स्वार्थ की रोटियां सेकेंगे। इसलिए अब जो कुछ भी करना है, मुन्नियों ! तुम्हें ही करना है। बदनाम होना छोड़ अपने सम्मान के लिए खड़े होना है। तुमको ही अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करनी है। तुमको ही अपनी अस्मिता बचानी है। अपनी रक्षा के लिए लड़ो, सुरक्षा के लिए लड़ो, अपने वर्चस्व के लिए लड़ो ..... लड़ो बस लड़ो .....

लक्मे सैलून ने पेश किया 'द न्यू एज ब्राइड्स'

उदयपुर। नवीनतम ब्यूटी और ग्रूमिंग सर्विसेज़ के लिए उदयपुर में मधुबन में पहले लक्मे सैलून का शुभारंभ हुआ। इस नए सैलून में मेहमानों को हेयर एवं मेकअप में नवीनतम ट्रैंड्स, उपलब्ध होंगे और वो भी रनवे कलेक्शन से। यह कलेक्शन नए दौर की दुल्हन को उसके जीवन के उस खास दिन बेहद खास तरीके से दमकने का मौका देता है ताकि वह खुद को किसी महारानी से कम न समझे। शनिवार को मधुबन में लक्मे सैलून की नैशनल क्रिएटिव डायरेक्टर-मेकअप सुषमा खान ने बेहद लोकप्रिय मॉडलों पर दो आधुनिक और शानदार लुक- इंपीरियल रूबी एवं सुप्रीम रूलर प्रदर्शित किए।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में सुषमा खान ने कहा कि उदयपुर की महिलाएं खूबसूरत कुदरती फीचर्स के लिए जानी जाती हैं और यह इन दुल्हनों को उनके खास दिन के लिए तैयार करना वाकई सुखद अहसास होता है। लक्मे सैलून में हम क्वालिटी मेक-अप और हेयर केयर उत्पादों का इस्तेमाल करते हैं जो ब्राइड को आकर्षक बनाते हैं। स्ट्रोबिंग एवं इल्युमिनेटिंग जैसी पेशेवर तकनीकों के चलते ब्राइड्स को दमकता रूप-रंग मिलता है। इसके अलावा, दुल्हन की जरूरतों पर खास ध्यान दिया जाता है और उसकी त्वचा तथा बालों के मुताबिक कस्टमाइज़्ड पैकेज उपलब्ध कराया जाता है।

इंपीरियल रूबी : इस लुक में लाल और गोल्डन रंग का प्रमुखता से इस्तेमाल किया गया है। इसका बेस ड्यूवी फ्रैश और रोज़ी होता है। गोल्ड के वॉर्म शेड्स को आंखों के ऊपर शानदार ग्राफिक विंग्ड आईलाइनर के साथ ब्लेंड किया गया है, जिसमें लंबी और मोटी लैशेज़ दी गई हैं। पाउट को बेहतर बनाने के लिए बोल्ड रेड लिप को हल्का सा गोल्डन टच दिया गया है। माथे पर एक शानदार लाल ग्लिटर टैटू बिंदी और हनी कलर्ड लैंस इस लुक को और आकर्षक बनाते हैं।

सुप्रीम रूलर : आंखों पर ब्रॉन्ज़ और गोल्ड के भव्य शेड्स इसकी खासियत है। गोल्डन-ब्रॉन्ज़ शिमर खूबसूरत हिंदुस्तानी त्वचा की रंगत से मेल खाता है। हेज़ल ब्राउन कॉन्टैक्ट लैंसों तथा ट्विगी आइ लैशेज़ की मदद से आंखों

के मेकअप को और उभारा जाता है। इस कलेक्शन के अन्य आकर्षक ब्राइडल लुक में शामिल हैं:

रीगल चार्म : दिव्य ब्राइडल लुक, पेस्टल ब्राइड हल्के टोन्स और शिमरी बेस के साथ उत्कृष्ट महिला की सौम्यता को दर्शाता है।

ग्लोइंग डिवा : इस ब्राइडल लुक में आइकॉनिक महिलाओं की आकर्षक और फेमिनिन गुणों को उभारा जाता है। क्राउनिंग ग्लोरीज़: बेहद भव्यता, लाइलैक और पर्पल के शेड्स के साथ गोल्ड रंग का इस्तेमाल किया गया है, जो महिलाओं की वास्तविक खूबसूरती को सामने लाता है।

रॉयल रेडिएंस : शिमर और चटख रंगों के इस्तेमाल से काली रात में सितारों से भरे आसमां जैसा लुक तैयार किया जाता है, जो साहसी दुल्हन के लिए बिल्कुल उपयुक्त होता है।

आइकॉनिक स्पार्कल : राजसी महिलाओं के चुंबकीय आकर्षण को ध्यान में रखते हुए इस लुक में पर्पल और वॉयलेट रंग का बखूबी इस्तेमाल किया गया है और इसे बेहतर बनाने के लिए पर्ल का टच दिया गया है।

मैजेस्टिक फ्लेयर : ताकतवर महिला के जज़्बे को जीवंत बनाने के लिए यह लुक गोल्ड और ब्लैक के मैगनेटिक शेड्स को पिंक के हल्के शेड्स के साथ ब्लेंड करता है।

लक्मे लीवर सीईओ पुष्कराज शेनाई ने कहा कि लक्मे सैलून के विशेषज्ञों की टीम कस्टमाइज्ड प्री-ब्राइडल और ब्राइडल ट्रीटमेंट मुहैया करा रही है, जिन्हें विशेष तौर पर दुल्हनों की निजी ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है। दुल्हन की दोस्तों और पारिवारिक सदस्यों के लिए भी विभिन्न पैकेज उपलब्ध हैं।

इन सभी सेवाओं को पारंपरिक भारतीय विवाह की रस्मों जैसे सगाई, सगन, शादी और रिसेप्शन के अनुसार बनाया गया है। भावी दुल्हन के साथ सलाह करने के बाद हमारे एक्स्पर्ट्स उन्हें ऐसा ट्रीटमेंट देते हैं, जो उनकी त्वचा और बालों को बेहतर बनाएगा और इस अवसर के लिए उन्हें ग्लो भी देगा।

डीएचएफएल द्वारा वित्तीय साक्षरता केन्द्र लांच

उदयपुर। निजी क्षेत्र में भारत की शीर्ष हाउसिंग फायनेंस कम्पनी डीएचएफएल ने हाल ही जयपुर में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम 'शर्मा जी के सवाल, विनोद जी के जवाब' लांच किया है, ताकि आर्थिक रूप से पिछड़े (ईडब्ल्यूएस) एवं अल्प आय वर्ग (एलआईजी) निवासियों को वित्तपोषण के बारे में जागरूक करवाया जा सके। इस कार्यक्रम के तहत कम्पनी ने सामान्य प्रश्नों पर आधारित नुक्कड़ नाटक का आयोजन जवाहर नगर, कठपुतली नगर और शास्त्री नगर में आयोजित किया जिसमें दो किरदार 'शर्मा जी और विनोद जी' के बीच में वार्तालाप के माध्यम से इन कॉलोनी के वाशिन्दों को वित्तीय उत्पाद जिनमें बचत, ऋण और सुरक्षा की बारीकियों के बारें में बताया।

डीएचएफएल के सीएसआर हेड एस. गोविन्दन ने कहा कि इस कार्यक्रम को सरकार की 'प्रधानमंत्री आवास योजना' और '2022 तक सबको आवास' को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है, यह कार्यक्रम ऐसे समूहों के लिए मददगार होगा जो अनौपचारिक बस्तियों में रहते हैं और उन्हें सुरक्षित, स्वच्छ एवं वहनीय आवास की जरूरत है। इस कार्यक्रम को राजस्थान सरकार के शहरी क्षेत्रों में वहनीय आवासों की भीषण कमी से जूझते मुख्यमंत्री की 'जन आवास योजना' का पूरक कहा जा सकता है इस योजना का लक्ष्य ईडब्ल्यूएस/एलआईजी वर्ग के लिए आवास निर्माण करना हैं।

जानदार सफर से शानदार कदम गति
'शब्द रंजन' का दूसरा पड़ाव सबके योग-सहयोग से....

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।